I J R S S I S, Issue (IX), Vol. (I), May 2023: 265-269
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article

Reg. No. : MH-NGP/0000167

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES

© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

दलित वर्ग के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० मनीषा सिंह
प्राचार्या/संकायाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)
रजत कॉलेज अम्बेडकर नगर (उ०प्र०)

Communicated : 02.02.2023
Revision : 08.03.2023
Accepted : 07.04.2023
Published: 30.05.2023

सारांश :
प्रस्तुत अध्ययन '' दलित वर्ग के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'' (जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने के संदर्भ में)में मुख्य उद्देष्य के रूप में दलित समूह के माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की जनसंख्या नियंत्रण के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।है। तथा न्यादर्ष के रूप में मध्यप्रदेश राज्य के रीवा जिले से निर्धारित 200 में से 100–100 दलित समूह के शिक्षक एवं शिक्षिकायें चयन करके प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। न्यादर्ष से प्रदत्त संकलन हेतु स्व–निर्मित प्रष्नावली का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र की परिकल्पना के रूप में दलित समूह के माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की जनसंख्या नियंत्रण के विचारों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः पाया गया कि दलित समूह के माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की जनसंख्या नियंत्रण के विचारों में कोई सार्थक नहीं पाया गया। शिक्षकों/शिक्षिकाओं ने जनसंख्या वृद्धि पर चिन्ता व्यक्त करते हुए एक स्वर से समस्या के निदान हेतु जनसंख्या शिक्षा लागू करने के पक्ष में अपना अभिमत व्यक्त किया है। शिक्षक समुदाय का मानना है कि जनसंख्या वृद्धि पर रोकथाम के कारगर उपाय किये जाने चाहिए। जनसाधारण को शिक्षित वर्ग द्वारा प्रेरित किया जाना लाभप्रद सिद्ध होगा। जनसंख्या नियंत्रण कार्य के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु जनसंख्या शिक्षा का लागू किया जाना अत्यावश्यक है।

महत्वपूर्ण शब्द : दलित वर्ग, माध्यमिक स्तर, षिक्षकों का विचार

प्रस्तावना :

किसी भी देश की भूमि कितनी उपजाऊ क्यों न हो और चाहे जितने पहाड़, नदियाँ, जंगल आदि प्राकृतिक साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों किन्तु जनसंख्या अधिक होने से लोगों का आलसी, रोगी, दुर्बल और चरित्रहीन होना अवश्यम्भावी है और ऐसा देश उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए आशातीत गति प्राप्त नहीं कर सकता है। जनसंख्या मात्रा व गुण की दृष्टि से समुचित रहने पर वह देश तेजी से आर्थिक तथा अन्य समस्त क्षेत्रों में उन्नति कर सकता है। नियंत्रित जनसंख्या से देश समृद्धिशील हो सकता है। हमारा सम्पूर्ण देश जनसंख्या वृद्धि की विकराल समस्या से जूझ रहा है। जनसंख्या की द्रुतगति से हो रही वृद्धि के कारण प्रतिव्यक्ति की आय में कमी होती जा रही है। गरीबी रेखा के नीचे आने वाले लोगों में जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि से उनकी गरीबी कम होने की अपेक्षा उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। बेरोजगारी की समस्या बढ़ रही है। दिन प्रतिदिन प्रदूषण बढ़ता जा रहा है और भोजन, जल, आवास, कपड़ा, विद्युत आदि की आपूर्ति हो पाना कठिन होता जा रहा है। वे लोग जो शिक्षा के महत्व को नहीं समझते वे जनसंख्या शिक्षा से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं। अधिक सन्तानों की उत्पत्ति ईश्वर की देन मानते हैं। परिणामस्वरूप गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी और अशिक्षा को बढ़ावा मिल रहा है। लोगों को जब तक साक्षर नहीं बनाया जायेगा वे

सीमित व बृहत परिवारों से लाभ–हानि के बारे में अवगत नहीं हो सकते जबकि शिक्षित लोग असीमित परिवारों की अच्छाईयों/ बुराईयों से अवगत होने के कारण जनसंख्या वृद्धि के पक्षधर नहीं रहे। चौधरी चरण सिंह हों अथवा मोरार जी देसाई, नेहरु हों अथवा महात्मा गाँधी, इन्दिरा जी अथवा लाल बहादुर शास्त्री इन सभी प्रसिद्ध व सुविज्ञ लोगों के परिवार में सन्तानों की संख्या सीमित रही।

जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप नगरों के आकार में वृद्धि हुई है और शहरों में भीड़ बढ़ती जा रही है। इधर तीन चार दशकों में भारत में जनसंख्या का विस्फोट सा हो रहा है जिसके कारण देश को लाभ की अपेक्षा नुकसान अधिक हो रहा है। जिस परिवार में बच्चे अधिक होते हैं, उनमें उनकी देखभाल, लालन–पालन, शिक्षा आदि की ओर माता–पिता का ध्यान न जाकर उन्हें भोजन वस्त्र जुटाने में लगा रहता है। बच्चे दुबले, पतले, अस्वस्थ और अशिक्षित रहने से पीढ़ी दरिद्र और निस्तेज दिखाई देती है। यदि हम देश की गरीबी और अशिक्षा को कम करना चाहते हैं तथा देश की प्रगति चाहते हैं तो हमें जनसंख्या की बाढ़ पर रोक लगानी होगी। अस्तु समय की माँग है कि जनसंख्या नियंत्रण हेतु कारगर कदम उठायें जायं और यह तभी सम्भव है जब जन–जन तक जनसंख्या वृद्धि व उसके परिणामों से लाभ हानि का ज्ञान पहुँचाया जाये। इसके लिए जनसंख्या शिक्षा की महती आवश्यकता है।

भारत के पूर्व **राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन** ने अपने भाषण में कहा था कि – ''बढ़ती हुई बेरोजगारी और मनुष्य का दुःख बढ़ती जनसंख्या के ही दुष्परिणाम हैं।'' यद्यपि हमारी सरकार ने जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा के कारण देश में बढ़ रहे दुर्भिक्ष व संकट से मुक्ति पाने हेतु कई बार प्रभावी कदम उठाकर जनसंख्या नियंत्रण की चेष्टा की किन्तु इसके उचित ज्ञान के अभाव और साधारण जनता के दृष्टिकोण में साम्य स्थापित न हो पाने के कारण सरकार को इसके बुरे परिणाम भुगतान पड़े। अतएव जनसंख्या नियंत्रण के पूर्व जनता की भावनाओं से अवगत होना होना अत्यावश्यक हो गया है।

देश को स्वतंत्र हुए लगभग छः दशक से अधिक व्यतीत हो चुके हैं। इस लम्बे समय में देश ने सम्पूर्ण समस्याओं को हल करने के लिए अधिक प्रयत्न किये हैं। इन सभी समस्याओं में भोजन, वस्त्र तथा आवास की समस्याओं को हल करने पर विशेष बल दिया गया है। खाद्य समस्या को हल करने के लिए कृषि योग्य भूमि का विस्तार किया गया है। सिंचाई का प्रबन्ध किया गया है। उत्तम कोटि के बीजों के प्रयोग पर बल दिया गया है। रासायनिक खाद के निर्माण के लिए विशाल फैक्ट्रियों की स्थापना की गयी है। वस्त्र की समस्या को हल करने के लिए हथकरघा उद्योग का विकास किया गया है और कपड़ा मिलों में स्वचालित यंत्रों को लगाया गया है। गृह समस्या के हल के लिए नवीन प्रकार के कम खर्च में बनने वाले मकानों को बनाने का प्रबन्ध किया गया है और मकान बनवाने के लिए कम ब्याज तथा सुविधाजनक शर्तो पर ऋण की व्यवस्था की गयी है। यद्यपि इन प्रयासों के फलस्वरूप समस्याओं की भीषणता तो कम हो

गयी है पर वे पूर्णतया हल नहीं हो पायी हैं। कुछ समय के लिए तो ऐसा ज्ञात होता है कि समस्या दूर हो गयी है पर थोड़े समय बाद उनका भयंकर रूप पुनः हमारे सामने आ जाता है। कारण यह है कि तीन–चार दशकों में भारत में जनसंख्या का विस्फोट सा हो रहा है। हमारी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जैसे ही हम कुछ प्रयत्न करके अपनी उपज आदि को बढ़ा पाते हैं। हमारी जनसंख्या आगे को बढ़ जाती है और हम जहाँ के तहां फिर दिखाई देते हैं। जेम्स रेस्टन ने तो इस खतरे को आणविक शक्ति के खतरों से भी अधिक विनाशकारी बताया है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं–

दलित समूह के माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की जनसंख्या नियंत्रण के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना –

दलित समूह के माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की जनसंख्या नियंत्रण के विचारों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :

शोधार्थिनी जिस ढंग से शोध कार्य पूर्ण करने की योजना बनाकर कार्य पूर्ण करता है उसे शोध विधि कहते हैं। शोध की विधियों में प्रमुख ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, प्रयोगात्मक, क्रियात्मक और तुलनात्मक आदि हैं। शोधकर्त्री ने अपने इस शोध कार्य में वर्णनात्मक एवम् प्रयोगात्मक शोध विधियों का प्रयोग करके जो परिणाम प्राप्त किए हैं उनकी वैधता की कसौटी के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले से निर्धारित 200 में से 100–100 दलित समूह के शिक्षक एवं शिक्षिकायें चयन करके प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त प्रश्नावली का प्रयोग माध्यमिक स्तर पर शिक्षण कार्य कर रहे दलित समूह के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं पर निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। उपरोक्त शिक्षक, शिक्षिकायें शहरी व ग्रामीण क्षेत्र से चुने गये हैं।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन तथा अज्ञात दत्त संकलित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए दत्त संकलित करने हेतु अथवा नवीन क्षेत्र का उपयोग करने हेतु कतिपय यन्त्रों अथवा उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रों को उपकरण कहते हैं। शोधार्थी ने अपने शोध कार्य हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली के उपकरण का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ : न्यादर्श के कुल शिक्षकों के मध्यमान व मानक विचलन तथा प्रमाणिक त्रुटि व क्रान्तिक निष्पत्ति ज्ञात की गई है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या :–

प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

तालिका

दलित समूह के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के विचारों

का तुलनात्मक अध्ययन

क्र0 सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता
1.	शिक्षक	100	47.9	21.50	0.79	असार्थक
2.	शिक्षिकाऐं	100	33.9	12.87		

तालिका से स्पष्ट होता है कि दलित समूह के शिक्षकों व शिक्षिकाओं के समान न्यादर्श हेतु मध्यमान क्रमशः 47.9 तथा 33.9 और मानक विचलन 21.50 व 12.87 है तथा इनके मध्य क्रान्तिक निष्पत्ति 0.79 आई है जो 5 प्रतिशत पर प्राप्त मान 1.96 से न्यून है। ये आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं कि शिक्षकों व शिक्षिकाओं के विचारों में जनसंख्या नियंत्रित रखने के सम्बन्ध में समानता है। पुरुष शिक्षक, शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक पढ़े लिखे हैं तथा वे अपने परिवार के भरण–पोषण के प्रति अधिक चिन्तित हैं। शिक्षिकाओं का मध्यमान तथा मानक विचलन पुरुषों की अपेक्षा कम है, इंगित करता है कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि कम है। परिकल्पना के बिन्दु के अनुसार सांस्कृतिक पृष्ठभूमि यथा निवास के आसपास का वातावरण तथा अन्तिम बिन्दु सामाजिक–आर्थिक स्तर की विषमता जनसंख्या को प्रभावित करती है। इस तरह परिकल्पना में लिये गये समस्त बिन्दुओं की पुष्टि हो रही है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि दलित समूह के शिक्षकों और शिक्षिकाओं के प्रति प्राप्त मध्यमान व मानक विचलन का अंतराल प्रमाणित करता है कि नगर क्षेत्र के शिक्षक व शिक्षिकायें देहात के शिक्षकों व शिक्षिकाओं की अपेक्षा उन्नत वातावरण से जुड़े होने के कारण जनसंख्या विस्फोट से अधिक चिन्तित हैं। इससे भिन्न देहात अर्थात् ग्रामीण अंचलों के शिक्षक समुदाय का मानना है कि अधिक संख्या वाले परिवारों की आय अधिक होती है। अतः वे संतानोत्पत्ति को ईश्वर की देन मानकर जनसंख्या वृद्धि से अपेक्षाकृत अधिक चिन्तित नहीं है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष :

दलित समूह के माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की जनसंख्या नियंत्रण के विचारों में कोई सार्थक नहीं पाया गया।

शैक्षिक उपयोगिता

शिक्षकों/शिक्षिकाओं ने जनसंख्या वृद्धि पर चिन्ता व्यक्त करते हुए एक स्वर से समस्या के निदान हेतु जनसंख्या शिक्षा लागू करने के पक्ष में अपना अभिमत व्यक्त किया है। शिक्षक समुदाय का मानना है कि जनसंख्या वृद्धि पर रोकथाम के कारगर उपाय किये जाने चाहिए। जनसाधारण को शिक्षित वर्ग द्वारा प्रेरित किया जाना लाभप्रद सिद्ध होगा।

जनसंख्या नियंत्रण कार्य के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु जनसंख्या शिक्षा का लागू किया जाना अत्यावश्यक है।

तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या हमें गम्भीरतापूर्वक यह विचार करने को विवश करती है कि इसे किस प्रकार नियंत्रित किया जाये। भारत जनसंख्या की दृष्टि से एक पंचवर्षीय योजना आगे है एवं आर्थिक विकास के क्षेत्रों में दो योजना पीछे। भारत की जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि की निन्दा करते हुए डा0 चन्द्रशेखर ने कहा है– ''भारतवर्ष में सन्तानोत्पत्ति एक सबसे बड़ा कुटीर उद्योग बन गया है।'' ये सभी

कथन भारत जैसे आर्थिक व्यवस्था वाले देश में जनसंख्या वृद्धि की समस्या के अन्तर्निहित खतरों के संकेत करते हैं। जेम्स रेस्टन ने तो इस खतरे को आणविक शक्ति के खतरों से भी अधिक विनाशकारी बताया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

कपिल, एच.के.,(2004) ;अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा,

गैरिट, हेनरी ई0,(1989);शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली

गुप्ता डॉ0 एस0 पी0 एवं अलका गुप्ता,(2004);उच्चतर षिक्षा मनोविज्ञान,षारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण

पाण्डेय, रामषकल ;षैक्षिक नियोजन ओर वित्त प्रबन्धन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

राय, पारसनाथ(2007);अनुसंधान–परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,आगरा।

त्रिपाठी, श्रीमती डा0 वीणा (पी–एच0डी0, शोध प्रबन्ध, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर–1983.

यादव श्रीमती सरोज 1990– एम0एड0 लघु शोध प्रबन्ध, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर.

गुप्ता, श्रीमती सुशीला ने 1996–पी–एच0डी0 शोध प्रबन्ध, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर